रजनी द्विवेदी
ritu.dwi@gmail.com

शिक्षक शिक्षा में पढ़ना सीखने की जगह

सार

यह लेख कुछ अहम दस्तावेजों में भाषा व भाषा शिक्षण को लेकर कहे गए कुछ मुख्य बिन्दुओं को रेखांकित करते हुये इनके निहितार्थों की चर्चा करता है। लेख यह भी दर्शाता है कि गुजरे कुछ वर्षों मे भाषा की समझ मे विस्तार हुआ है लेकिन साथ ही कुछ ऐसी भी बातें हैं जो महत्वपूर्ण होते हुये भी भाषा पर होने वाले संवाद का हिस्सा नहीं बन पायी। लेख यह कहता है कि इस संवाद को आगे बढ़ाने की जरूरत है और इस हेतु इन बिन्दुओं पर लगातार और अलग अलग परिप्रेक्ष्य से संवाद करने और समझने की जरूरत है।

परिचय

शिक्षक तैयारी शिक्षा में एक अहम मुद्दा है। हमारे देश में शिक्षक तैयारी के लिए सेवा पूर्व प्रशिक्षण और सेवारत प्रशिक्षणों की व्यवस्था है। सेवापूर्व प्रशिक्षण एक लंबी अवधि का पाठ्यक्रम है जो भावी शिक्षकों को शिक्षण के पेशे के लिए तैयार करता है। सेवारत प्रशिक्षण का उद्देश्य यह है कि शिक्षकों के क्षमता विकास में निरंतरता बनी रहे और शिक्षक ज्ञान मंथन की प्रक्रिया से जुड़े रहें।

सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षण के लिए पाठ्यचर्या भी है और एक निश्चित पाठ्यक्रम भी लेकिन सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण के लिए नहीं। सेवारत प्रशिक्षण के लिए कोई निश्चित पाठ्यक्रम हो नहीं सकता लेकिन कोई ऐसे दस्तावेज़ भी नहीं हैं जिनमें इनकी रूप रेखा, अथवा मार्गदर्शक सिद्धान्तों के बारे में विस्तार से चर्चा हो जो सेवारत शिक्षण प्रशिक्षण का एक रेखाचित्र बना सकें। एक महत्वपूर्ण अवलोकन इन दोनों ही प्रशिक्षणों के संदर्भ में यह है कि दोनों में ही पढ़ने पर, समझ कर पढ़ने पर और शिक्षकों को पढ़ने का चस्का लगाने और इस तरह सीखने में उन्हें एक हद तक आत्मनिर्भर बनाने के संदर्भ में कोई सायास कोशिशे नहीं की जाती।

पढ़ना सीखना कोई एकांगी प्रक्रिया नहीं है। पढ़ना सीखने में, भाषा बोलने, सुनने, लिखने, उसमें सोच पाने, अर्थ गढ़ पाने आदि की भी खास भूमिका होती है। इस लेख में इन सभी बिन्दुओं पर चर्चा नहीं है, यह मुख्यतः शिक्षकों की सीखने–सिखाने की तैयारी के दौरान, पढ़ना सीखने को कितनी जगह दी जाती है इस पर केन्द्रित है। पहले पढ़ने की संस्कृति, और पढ़ने की जरूरत पर बात है। आगे इस स्तर पर पढ़ना क्या है? पढ़ने से क्या अपेक्षा है? और फिर शिक्षक शिक्षा मे पढ़ने की जगह के संदर्भ में शिक्षक तैयारी के मेरे कुछ अनुभव हैं। ये अनुभव मूलतः शिक्षक प्रशिक्षणों और शिक्षक शिक्षा के डी एड पाठ्यक्रम विकसित करने की कार्यशालाओं और डी एड की कक्षाओं के हैं इस चर्चा मे यह भी शामिल है कि इस दिशा में क्या प्रयास किए गए हैं। मानना है की शायद ये प्रयास आगे क्या किया जा सकता है यह सोचने में मददगार होंगे।

पढ़ने की संस्कृति

यह एक त्रासदी ही है कि हमारे अधिकांश शिक्षण संस्थानों में; चाहे वह स्कूल हो अथवा कॉलेज, पढ़ना सीखने को कोई खास तवज्जो नहीं दी जाती। स्कूली शिक्षा हो अथवा उच्चा शिक्षा ज़ोर सिर्फ और सिर्फ पाठ्यपुस्तकों में दी गयी सामग्री को बच्चों को समझाने, फिर उसे याद करवाने पर होता है ताकि वे परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर सकें। परीक्षा उत्तीर्ण करने का यह दबाव इस विश्वास को भी बढ़ावा देता है कि अन्य किताबों को पढ़ने में लगाया गया

समय एक तरह से व्यर्थ ही है क्यों कि उनमें से परीक्षाओं में कुछ नहीं आता और इस तरह वे परीक्षा उत्तीर्ण करने में मददगार नहीं होती। यह नहीं सोचा जाता कि अलग अलग किताबों को पढ़ना, उनसे अंतःक्रिया करना पढ़ना सीखने में सहायक होता है और एक बार यदि बच्चा समझकर पढ़ना सीख जाए तो वह अपनी पाठ्यपुस्तकों को भी स्वयं पढ़कर समझ पाएगा।

पाठ्यपुस्तक केन्द्रित इस तरीके का परिणाम यह होता है कि बच्चों में किसी भी पाठ्य सामग्री को स्वतंत्र रूप से चयन करने, पढ़ने, और उससे जूझने की आदत ही विकसित नहीं हो पाती। अतः पाठ्यपुस्तक को पढ़ना व समझ पाना भी आसान नहीं होता। कई कक्षाओं के अवलोकनों के दौरान यह पाया कि बच्चे पाठ्यपुस्तक और उसके विभिन्न अध्यायों को पढ़ने के लिए अध्यापक पर इतने आश्रित हो जाते हैं कि वे पूरी पुस्तक को टटोलकर देखना तो दूर, जो पाठ नहीं पढ़ाया गया है उसे हाथ भी नहीं लगाते।

यह भी सच है कि स्कूलों में पढ़ने के लिए स्तरवार उपयुक्त, विविध प्रकार की सामग्री उपलब्ध ही नहीं है। जिन कुछ स्कूलों में यह सामग्री उपलब्ध है भी, वहाँ इस सोच की कमी है कि इस सामग्री के साथ क्या काम किया जाय, कैसे किया जाय यानि इसका कैसे इस्तेमाल हो ताकि बच्चों में पढ़ने के प्रति रूझान पैदा हो सके। महाविद्यालयों की भी कमोबेश यही स्थिति है। इन्हीं के चलते विद्यार्थियों को किताबों से दोस्ती करने के अवसर ही नहीं उपलब्ध हो पाते हैं। बच्चे जिनमें से कुछ भावी शिक्षक भी होते हैं वे न तो अपने स्कूली पढ़ाई के दौरान और ना ही शिक्षकीय तैयारी के दौरान ऐसे अनुभवों से गुजरते हैं जो उन्हें किताबों से दोस्ती करने, वे पढ़ सकते हैं समझ सकते हैं यह आत्मिश्वास विकसित करने और सीखने में पढ़ने का महत्व महसूस करने में मददगार हो।

परीक्षा पद्धति का तरीका, पाठ्यपुस्तक केन्द्रित पढ़ाई, पढ़ने लायक पुस्तकों की गैर उपलब्धता आदि वजहों के चलते धीरे-धीरे वे इस मुकाम पर पहुँच जाते हैं कि जहां उन्हें भी लगने लगता है कि पुस्तकों के मुक़ाबले पास बुक्स और कुंजिया ही अधिक महत्वपूर्ण हैं।

पढ़ने की जरूरत

कुछ राज्यों में, विकसित किए गए डी.एड. पाठ्यक्रम के उन्मुखीकरण के लिए आयोजित कार्यशालाओं, व जिला संस्थानों के अवलोकन व अवलोकन के दौरान संकाय सदस्यों व विद्यार्थियों के साथ हुई चर्चाओं में यह महसूस हुआ कि अधिकांश लोगों को पढ़ने की आदत ही नहीं है। यह केवल संदर्भ पुस्तकों को पढ़ने को लेकर ही नहीं बल्कि शिक्षा से संबन्धित विभिन्न दस्तावेजों और यहाँ तक कि नोटिसों व सर्कयुलर आदि को पढ़ने के संदर्भ मे भी सही है, उदाहरण के लिए आए हुये किसी नोटिस को पढ़ना, किसी नए नियम या नीति को पढ़कर समझना और उसे लागू करने के संदर्भ में दिये गए निर्देश को समझना आदि सभी को लेकर ज़्यादातर शिक्षकों की अपेक्षा यही होती है कि कोई बता दे, समझा दे। ऐसे महत्वपूर्ण दस्तावेज जिनका लक्ष्य स्कूली शिक्षा के संपूर्ण परिदृश्य को बदलना है और जिसमें शिक्षकों की महती भूमिका है जैसे राज्य की पाठ्यचर्या और एन. सी. एफ. के बारे में कई स्कूलों के अवलोकन के दौरान और कई कार्यशालाओं में पूछने पर: आपने एन सी एफ तो पढ़ा ही होगा तो ऐसे जवाब मिले… हाँ सुना तो है लेकिन अभी तक कोई प्रशिक्षण ही नहीं हुआ जो बताए कि उसमें क्या है? ऐसी ही अपेक्षा किसी भी अन्य दस्तावेज़ के संदर्भ में भी लागू होती है अक्सर शिक्षकों को लगता है कि कोई बता दें तो बेहतर है बनिस्बत कि उनको पढ़ने के लिए कहा जाए।

शिक्षकों के लिए विशेषकर आरंभिक कक्षाओं के शिक्षकों के लिए, शिक्षक-शिक्षकों के लिए पढ़ना जरूरी है। यह माना जाता है और ऐसी अपेक्षा भी की जाती है कि यदि शिक्षक कुशल पाठक होंगे तो वे सीखने में आत्मनिर्भर बनेंगे। यानि वे यह समझ पाएगे कि उन्हें कब, क्या सीखने की जरूरत है, और सीखने की यह जरूरत क्यों हैं? वे इस दिशा में सोच पाएंगे कि जो वह सीखना चाहते हैं उसके लिए उन्हें किस तरह की सामग्री की जरूरत होगी, वह कहाँ उपलब्ध हो पाएगी और फिर अपने उद्देश्यों के मद्देनजर उपलब्ध सामग्री में से सबसे उपयुक्त क्या है? सीखने में यह आत्मनिर्भरता, सीखने की निरंतरता के लिए भी आवश्यक है।

समझ के दायरे के विस्तृत करने के लिए भी पढ़ना जरूरी है; समझ में बहुत सी बातें शामिल होती हैं; यदि हम विषय की समझ की बात करें तो नए शब्दों को जानना, अपने शब्द भंडार में पहले से मौजूद शब्दों के नए अर्थों को समझना, नए संदर्भों में उनका उपयोग कर पाना, अवधारणा को समझना, किन्हीं दो अवधारणाओं के बीच संबंध को समझना, विषय की प्रकृति को समझना आदि। शिक्षकों से अपेक्षा होती है कि विषय की उनकी समझ में गहराई व पैनापन हो और यह तभी हो सकता है जब वे विषय से संबन्धित सामग्री को पढ़ें और टेक्स्ट के साथ मानसिक रूप से जुड़े हों। विषय की इस समझ में विश्लेषण की प्रक्रिया भी शामिल है, पढ़ना, न केवल जो पढ़ा गया है उसका विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करता है बल्कि सीखने सिखाने के कार्य के विश्लेषण की क्षमता, सृजित ज्ञान को परखने और संशोधित करने की क्षमता भी विकसित करता है।

पढ़ने की आदत विकसित हो इसके लिए पढ़ना जरूरी है। स्मिथ का कहना है कि "आप पढ़कर ही पढ़ना सीख सकते हैं"। शिक्षक न केवल पढ़ना सीखें बल्कि पढ़ने की अपनी इस क्षमता को निरंतर निखार पाएँ, पढ़कर पढ़ने को सराह पायें, वे स्वयं पढ़ने के विभिन्न उद्देश्यों को समझ पायें, अपने स्वयं के लिए पढ़ने के विभिन्न उद्देश्यों को गढ़ पायें, इसलिए भी उनका पढ़ना जरूरी है।

पढ़ना क्या है ?

पढ़ना क्या है इसकी कोई एक परिभाषा नहीं दी जा सकती। पढ़ते-पढ़ते, पढ़ने की प्रक्रिया में भी बदलाव होता रहता है जैसे यह जाहिर सी बात है कि व्यस्कों अथवा शिक्षकों की पढ़ना सीखने की प्रक्रिया शुरुआती स्तर पर बच्चों के पढ़ने की प्रक्रिया से अलग है। शुरुआती स्तर पर जब बच्चे पढ़ना सीख रहें होते हैं तब उनमें समझकर पढ़ना सीखने की प्रक्रिया में कुछ डीकोडिंग के पहलू भी होते हैं और कुछ यांत्रिक बातें जैसे किस ओर से पढ़ना शुरू करें आदि। लेकिन जब हम शिक्षकों के संदर्भ में पढ़ना सीखने की बात करते हैं तो उसमें ये बातें शामिल नहीं होती। यहाँ समझकर पढ़ना महत्वपूर्ण है। शिक्षकों के संदर्भ में पढ़ने की बात करें तो उसमें कुछ ये बातें शामिल होंगी: शीर्षक/उपशीर्षक पढ़कर यह अनुमान लगा पाने की क्षमता कि लेख किस बारे में है; किसी टेक्स्ट, लेख को प्रवाहपूर्वक पढ़ पाने की क्षमता; लेख में दिये गए मुख्य बिन्दुओं को समझ पाना; दिये गए बिन्दुओं में जुड़ाव देख पाना: कहे गए बिन्दुओं को संपूर्णता में समझना (ना की छोटे छोटे वाक्यों में तोड़कर), अपने विश्वासों, अपनी समझ को अलग रख पहले यह समझना कि लेखक क्या कह रहा है, लेख का विश्लेषण कर पाने की क्षमता यथा दिये गए तर्कों, उदाहरणों को समझना, वैसी ही और परिस्थितियों व उदाहरणों के बारे में सोच पाना, प्रति उदाहरण सोच पाना: एक टेक्स्ट को दूसरे से संबन्धित कर पाना और यदि कोई नयी समझ उससे उपजती है तो उसके बारे में सोच पाना, पढे हुये पर यदि कोई सवाल हैं तो उन्हें पहचान पाना; अलग अलग तरह के टेक्स्ट से वाकिफ होना, और अपनी जरूरतों के अनुसार उन्हें ढूंढ पाना और अपने उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुये उन्हें पढ़कर उपयोग कर पाना।

अलग-अलग तरह के टेक्स्ट पढ़ने की इच्छा होना और अपने आप पर यह विश्वास होना कि किसी भी नए टेक्स्ट से जूझने और उसे पढ़कर समझने की क्षमता है और इसे बेहतर किया जा सकता है, यह भी महत्वपूर्ण है और पढ़ने की समझ में शामिल है।

जब हम शिक्षकों के पढ़ना सीखने के बारे में बात करते हैं तब वास्तव में उनसे यह सब सीखने की अपेक्षा है। यह सब सीखना यकायक नहीं हो सकता। इसके लिए समय और सोचे समझे प्रयासों की जरूरत है।

शिक्षक शिक्षा और पढ़ना

यह हिस्सा सेवापूर्व शिक्षक तैयारी (विभिन्न राज्यों के लिए शिक्षक शिक्षा (डी.एड., बी.एड.) के पाठ्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया के दौरान हुयी कई कार्यशालाओं, तैयार पाठ्यवस्तु के लिए संदर्भ व्यक्तियों का उन्मुखीकरण और डी एड कक्षाओं के अवलोकन व उस दौरान छात्र अध्यापकों से बातचीत) व सेवारत शिक्षकों के लिए आयोजित कार्यशालाओं में पढ़ना सीखने के मसले से संबन्धित हुये कुछ अनुभवों पर आधारित है।

सेवापूर्व शिक्षक तैयारी

शिक्षक-शिक्षा का पाठ्यक्रम सभी राज्यों में है लेकिन

वस्तुस्थिति यह है कि कुछेक को छोडकर अधिकांश संस्थानों में इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के लिए संदर्भ पुस्तकों की बात तो दूर, उपयुक्त और पर्याप्त संख्या में पाठ्यपुस्तकें भी उपलब्ध नहीं है। एक राज्य में डी.एड. पाठ्यक्रम के विकसित करने के शुरुआती चरण में तय किया गया कि पहले डी.एड. के मौजूदा पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को देखा जाय, उनमें क्या महत्वपूर्ण है, क्या रिक्तताएं हैं, उन्हें पहचाना जाये। इस उद्देश्य से पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकों की खोज करने पर पाया गया कि ना कोई पाठ्यक्रम मौजूद है, ना ही कोई पुस्तक। सिर्फ पासबुक्स उपलब्ध थी और पिछले कुछ सालों के पर्चों के जवाबों को संकलित कर लिखी गयीं कुंजिया ही उपलब्ध थीं। ऐसी ही स्थिति देश के अधिकांश भागों में हो सकती हैं।

डी.एड. पाठ्यक्रम विकसित करने की इस प्रक्रिया के दौरान, पाठ्यक्रम को लेकर शिक्षकों व संकाय सदस्यों से बातचीत के लिए हमें कई ज़िला शिक्षण संस्थानों मे जाने का अवसर मिला। इन विजिट के दौरान हमने इन संस्थानों के पुस्तकालयों में भी समय बिताया। वहाँ हमने यह तो पाया ही कि पुस्तकालयों में विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों का आना जाना, वहाँ बैठकर पढ़ना अथवा पुस्तकों का इश्यू करवाना न के बराबर था। इन पुस्तकालयों में किताबों को टटोलते वक्त हमें अचरज भी हुआ कि इतनी अच्छी सामग्री इन पुस्तकालयों में उपलब्ध है। अग्रेज़ी और हिन्दी में ऐसी बहुत सी पुस्तकें इन पुस्तकालयों में थी जो महत्वपूर्ण हैं खासकर के शिक्षकों के लिए जैसे गिजुभाई, रबिन्द्रनाथ टैगोर, गांधी के शिक्षा पर विचार, 60, 70 के दशक में विकसित किए गए पाठ्यक्रम, शिक्षा आयोग और शिक्षा नीति के दस्तावेज़ आदि। लेकिन पुस्तकालय में ये पुस्तकें उपलब्ध है यह जानकारी ना तो व्याख्याताओं को थीं, ना ही उनके विद्यार्थियों को। शिक्षक विद्यार्थियों के साथ कक्षाओं में कार्य करते हुये पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त पुस्तकों का उपयोग महत्वपूर्ण है अतः उनका उपयोग किया जाना चाहिए यह सोच ही नदारद थी।

विभिन्न कार्यशालाओं में यह भी महसूस हुआ कि अधिकांश शिक्षकों के लिए समझकर पढ़ना मुश्किल कार्य है। कार्यशालाओं में लेखों के पढ़ने का काम करने के दौरान बहुत से ऐसे अनुभव हुये जैसे: शिक्षकों द्वारा लेख पर अपना ध्यान ही केन्द्रित न कर पाना, लेख की मुख्य बातों को ना पकड़ पाना, लेख में जो कहा गया है उसे ना समझते हुये वही कहना जो वे पहले से मानते हैं और कहते आये हैं। तब भी जब लेख उनकी समझ से बिलकुल ही अलग बात कर रहा है। साथ ही अलग अलग हिस्सों में दी गयी सामग्री में संबंध ना जोड़ पाना, दूसरे शब्दों में लेखों को संपूर्णता में ना समझकर उसे टुकड़ों टुकड़ों में समझना। ये सभी अनुभव इस आवश्यकता को रेखांकित करते हैं कि पढ़ने की तैयारी को लेकर शिक्षकों के साथ बहुत काम करने की जरूरत है।

पढ़ना सिखाने के लिए क्या क्या किया जा सकता है इस संदर्भ में, भावी शिक्षकों के लिए बनाए गए एक पाठ्यक्रम जिसमें शिक्षकों की पढ़ने की तैयारी पर ज़ोर था, उसके कुछ मुख्य बिन्दु यहाँ साझा करना चाहूंगी। पाठ्यक्रम में शामिल सभी विषयों की सामग्री के चयन, प्रस्तुतीकरण, अभ्यास बनाने के दौरान कुछ मुख्य बिन्दुओं का ध्यान रखा गया, ये बिन्दु थे:

सामग्री यानि चयनित लेख ऐसे हो जो शिक्षकों को अपने कार्य को समझने में मदद करें, यह शिक्षकों के द्वारा स्कूल व कक्षा में किए जाने वाले कार्यों, आने वाली चुनौतियों, उलझनों को संबोधित करे। भाषा, गणित, पर्यावरण जैसे विषयों में विषय की प्रकृति से संबन्धित बुनियादी लेख हों, प्राथमिक स्तर पर पढ़ाई जाने वाली विषय की कुछ महत्वपूर्ण अवधारणायेँ, प्रकरण हों व उनको पढ़ाने के तरीके, पढ़ाने के दौरान अक्सर आने वाली कठिनाईयों, बच्चों की प्रतिक्रियाएँ आदि से संबन्धित सामग्री हो और राज्य की पाठ्यपुस्तकों मे दिये गए कुछ पाठ भी हों। सैद्धांतिक विषयों की भाषा सरल व सहज हो। सिद्धांतों की सिर्फ़ व्याख्या ही न हो बल्कि साथ उपयुक्त उदाहरण भी हो जो कही गयी बात को समझने में मदद करे।

राज्य के सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश का संदर्भ हो , विशेषकर भाषा, पर्यावरण व समाजशास्त्र जैसे विषयों में। लेख ऐसे न हों जो बहुत ही जटिल व तकनीकी हों

बल्कि ऐसे हो जिन्हें एक आम शिक्षक पढ़ सके, समझ सके: यानि वह उस बारे में सोच सके, उस पर प्रश्न कर सके, अपनी सहमति व असहमति बता सके।

जो भी सामग्री चयनित की जाय उसकी भाषा सहज हो, ऐसे शब्द हो जो प्रचलन में हैं। जहाँ आवश्यकता है वहाँ तकनीकी शब्दावली का प्रयोग किया जा सकता है, लेकिन तब वहाँ उसकी उपयुक्त उदाहरणों के साथ व्याख्या भी हो ताकि पाठक (शिक्षक) को अर्थ समझने में कठिनाई ना हो।

लेखों के विभिन्न हिस्सों को पहचाना जाय, उनमें शीर्षक व उपशीर्षक दिये जाएँ। मुख्य बातों को टेक्स्ट बॉक्स में दिया जायें। पढ़कर समझने में मदद मिले इस हेतु हर हिस्से के अंत में, हिस्से का सारांश, मुख्य बिन्दु, जिनका दोहराना आवश्यक है, अथवा जो पढ़ा है उस संदर्भ में कुछ प्रश्न दिये जायें। व्यक्तिगत व सामूहिक रूप से पढ़ने व उस पर चर्चा करने व चर्चा को प्रस्तुत करने के अवसर भी गढ़े जायें।

हालांकि इसमें कितनी सफलता मिली इसको जानने के लिए कोई व्यवस्थित शोध तो नहीं किए गए। लेकिन विभिन्न जिलों में डी.एड. कक्षाओं के अवलोकन में और विद्यार्थी-शिक्षकों से बातचीत में समझ आया कि अभी भी कुछ विषयों में कुछ लेखों को पढ़ने में उन्हें दुविधा आती है लेकिन फिर भी अधिकांश सामग्री ऐसी है जिन्हें वे पढ़कर समझ सकते हैं।

सेवारत प्रशिक्षण

विभिन्न उद्देश्यों के मद्देनजर विभिन्न संस्थाओं द्वारा अलग-अलग तरह के प्रशिक्षण आयोजित किए जाते हैं। पाठ्यपुस्तक उन्मुखीकरण प्रशिक्षण, नीति संबंधित सूचना देने वाले प्रशिक्षण, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, शिक्षा का अधिकार जैसे दस्तावेजों व उनके निहितार्थों जैसे सतत एवं व्यापक मूल्यांकन, नयी पाठ्यपुस्तकें, पढ़ने की नयी विधियाँ आदि को समझने के लिए प्रशिक्षण, माहवार होने वाली बैठकें, अथवा साल में एक दो बार होने वाले छोटी व लंबी अवधि के प्रशिक्षण आदि सभी शामिल हैं। ये प्रशिक्षण शिक्षकों के शैक्षिक-विकास का हिस्सा हैं। अलग अलग जगहों और अलग-अलग समय पर इन प्रशिक्षणों में भाग लेने के, पढ़ने-पढ़ाने से संबन्धित कुछ अनुभव यहाँ दिये गए हैं। इनमें मूलतः साल में एक बार होने वाले लंबी अवधि के प्रशिक्षणों की ही बात है। जो देश भर में जिला प्राथमिक शिक्षा परियोजना के समय से चले आ रहें हैं।

सेवारत प्रशिक्षणों में भी पढ़ने से संबन्धित कोई कार्य नहीं होता। प्रशिक्षण के लिए तैयार मॉड्यूल संदर्भ व्यक्तियों के लिए होते हैं। उन्हीं के पास उसकी एक प्रति होती है और कई बार तो पूरे स्त्रोत समूह के पास एक प्रति ही होती है। अधिकांश मॉड्यूल निर्देशात्मक होते हैं, दिये गए निर्देशों को पढ़कर उनका अनुसरण कर, प्रतिभागियों को प्रशिक्षण देना होता है। प्रतिभागियों को पढ़ने के लिए न तो प्रशिक्षण के दौरान कोई उपयुक्त सामग्री उपलब्ध कराई जाती है, ना प्रशिक्षण पूरा होने पर। अतः न तो प्रशिक्षण के दौरान पढ़ना–पढ़ाना होता है, ना ही यह अपेक्षा होती है कि वे बाद में पढ़ें, क्यों कि ऐसे प्रयास भी नहीं होते कि प्रशिक्षण में हुयी चर्चा पर फिर से सोचने के लिए, जो समझ बनी है उसको बेहतर, और पुख्ता करने के लिए कोई सामग्री शिक्षकों को उपलब्ध कराई जाये।

ऐसा नहीं है कि इन प्रशिक्षणों का विकल्प संभव नहीं है। आगे चर्चा कुछ ऐसे प्रशिक्षणों की है जो इन प्रशिक्षणों से हटकर थे। इनकी तैयारी में कुछ गैर सरकारी संस्थाओं की भागीदारी थी। कई संस्थाओं ने मिलकर सोचविचार कर इन प्रशिक्षणों का स्वरूप तय किया था। प्रशिक्षण की एक रूपरेखा थी: प्रशिक्षण के उद्देश्य, सत्र व प्रत्येक सत्र के उद्देश्य, सत्र मे दिये जाने वाले टास्क, गतिविधियां और उनका स्वरूप, सत्र की समय सीमा, आदि। इस रूपरेखा मे लचीलापन भी था– इस उद्देश्य के मद्देनज़र कि जो भी चर्चा हो वह प्रशिक्षुओं को समझ आए बनिस्पत इसके कि सभी सत्रों को यांत्रिक ढंग से पूरा करके काम की इतिश्री कर ली जाय।

रूपरेखा के आधार पर बनाए गए मोड्यूल में सत्रों के प्रकरण, उद्देश्यों व सत्र प्रक्रिया के साथ साथ हर सत्र के लिए उपयुक्त पठन सामग्री का चयन भी किया गया। सामग्री चयन के कुछ मानदंड थे: ऐसी सामग्री जो पढ़ने में सहज हो, ज्यादा लंबी नहीं हो, शिक्षक सीखने-

सीखाने की प्रक्रिया के दौरान जिन अवधारणाओं, तथ्यों, स्थितियों से झूंझते हैं उनसे संबन्धित विविध प्रकार की बुनियादी सामग्री- जैसे बच्चे कैसे सीखते हैं? बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं? घर की भाषा और स्कूल की भाषा, कहानी सुनाने की जरूरत, गणित क्या है, गिनना क्या है, जोड़ बाकी, विज्ञान सीखने में क्या क्या शामिल हैं तथा विभिन्न प्रकरणों, अवधारणाओं पर कक्षा में काम करने से संबंधित शिक्षकों के अनुभव आधारित सामग्री।

इस सामग्री में पाठ्यपुस्तकों के अध्याय और साथ ही वे टास्क भी होते थे जो कार्यशाला में किए जाने होते। यह सुनिश्चित किया गया कि सभी सत्रों के लिए आवश्यक पढ़ने की सामग्री, संकलन के रूप में सभी शिक्षकों को पहले ही दिन उपलब्ध करा दी जाय। ताकि शिक्षक महसूस करें यह उनकी अपनी सामग्री है, वे उससे परिचित हो सके और सत्र के दौरान ही नहीं बल्कि जब उनकी इच्छा हो उसे पढ़ सकें।

इस स्तर पर पढ़ने की समझ और कार्यशाला के उद्देश्यों को ध्यान मे रखते हुये सामग्री पर अलग अलग तरह के टास्क बनाए गए, कुछ टास्क सत्र के दौरान के लिए थे और कुछ सत्र के बाद के लिए और कुछ पूरा दिन हो जाने के बाद के लिए। ऐसे कुछ टास्क के उदाहरण नीचे दिये गए हैं।

- सत्र के दौरान हुयी चर्चा के मूल बिन्दुओं को रेखांकित करना और उसके बाद संबन्धित सामग्री को पढ़ना।
- सामग्री को साथ साथ पढ़ना और हर हिस्से पर बातचीत करते जाना।
- लेख को पढ़ना और उस पर बनाए गए प्रश्नो के जवाब देना। प्रश्न का प्रकार सामग्री के प्रकार पर निर्भर होता था। अधिकांश प्रश्न ऐसे होते जो सामग्री को पढ़ने में मददगार होते जैसे: लेख किस बारे मे हैं। लेख की किन्हीं दो मुख्य बातों को बताए। 250 शब्दों में लेख का सारांश लिखें । लेख में दिये गए उदाहरण के जैसे दो और उदाहरण सोचें आदि।
- पाठ्यपुस्तकों के अद्यायों पर कार्य करना। पाठ को ध्यान से पढ़ना, उसमें दिये गए सभी सवालों/ प्रश्नों को हल करना, इस प्रक्रिया के दौरान उन सभी प्रश्नों को लिखते जाना जो जहन में आए। और फिर इस प्रश्न पर भी सोचना कि बच्चों के साथ जब इस अध्याय पर काम करते हैं तो उन्हें क्या क्या चुनौतिया आती होंगी।
- सभी (सत्र के बाद) चयनित लेख पढ़ें। लेख को दो-दो के समूह में अथवा व्यक्तिगत तौर पर पढ़ सकते हैं। सभी के द्वारा लेख पढ़ लेने के बाद, समूह में इस पर चर्चा करना और लेख के मुख्य बिन्दुओं को पहचानना, उन्हें लिखना। अगले दिन किसी एक समूह द्वारा लेख का प्रस्तुतीकरण। प्रस्तुतीकरण के बाद उस पर चर्चा; प्रस्तुत बिन्दुओं पर सहमति, असहमति रखना, प्रश्न पूछना, कोई बिन्दु छूट गया हो तो उसे प्रस्तुत करना, किस खास बिन्दु को रेखांकित करना आदि। चर्चा के सार को लिखना।

पढ़ने की रणनीतियाँ व अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

पढ़ने मे मदद के लिए भी कुछ ढांचे सुझावित किए गए जैसे पढ़ना शुरू करने से पहले एक बार पूरी सामग्री को सरसरी तौर पर देख लें, एक जायजा ले लें, कितने पृष्ठ हैं, क्या शीर्षक है, क्या उपशीर्षक है, ताकि अंदाज़ा हो जाय की लेख किस बारे में हैं। साथ ही लेखों पर सवाल बनाये जायें जो महत्वपूर्ण बिन्दुओं को पहचानने में मदद करे।

यदि सामग्री ऐसी है जिसे अधिकांश लोग पढ़कर नहीं समझ पाएंगे तब समूह में से उन लोगों को पहचानना जो उसे पढ़कर समझ सकते थे और फिर समूहों को ऐसे बनाना कि हर समूह में एक दो ऐसे व्यक्ति हो जो उस सामग्री को पढ़ सकें व अन्य को पढ़कर समझा सकें।

यदि कोई पठन सामग्री को पढ़ना जरूरी है लेकिन वह लंबी है और सत्र दौरान उसे पढ़ा जाना है लेकिन इतना समय नहीं है कि उसे पूरा पढ़ा जा सके तो सामग्री के विभिन्न हिस्से विभिन्न समूहों द्वारा पढ़ना और फिर उनका प्रस्तुतीकरण व चर्चा।

शिक्षकों को स्वतन्त्रता थी कि वे पूछ सकते थे कि फलां शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं है, क्या आप उदाहरण दे कर बता सकते हैं। या ये बात जो सामग्री मे कही गयी है यह कक्षा में नहीं हो सकती क्योंकि हमारी कक्षाएं तो बहुत बड़ी है, या इसे कक्षा में करने के लिए फला फला परिवर्तन

करने होंगे। साथ ही उन्हें यह कहने की भी स्वतन्त्रता थी कि पठन सामग्री तय समय में पूरी नहीं पढ़ी जा सकती, अथवा इसके साथ कुछ और सामग्री होती तो पढ़ने मे मदद मिलती या अन्य कोई जरूरी बात।

सभी के लिए एक समय सीमा निर्धारित थी लेकिन उसमें लचीलापन भी था। इन प्रशिक्षणों में शुरुआत मे ऐसा महसूस हुआ कि अधिकांश शिक्षक पढ़ने से कतराते हैं। लेकिन उनके साथ काम करते हुये यह समझ आया कि वे पढ़ना चाहते हैं, समझना चाहते हैं। वे यह एहसास नहीं चाहते कि वे पढ़ नहीं सकते, कुछ कर नहीं सकते जो उन्हें हमेशा दिलाया जाता है।

निष्कर्ष

पर्याप्त शोध हैं जो इस बात को रेखांकित करते हैं कि बच्चों को सीखने मे आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में उन्हें पढ़ना सीखाना एक आवश्यक कदम है। यह बात बच्चों पर नहीं बल्कि किसी भी सीखने वाले पर लागू होती है। शिक्षकों के लिए भी समझकर पढ़ना सीखना जरूरी है ताकि ना केवल वे ज्ञान के विभिन्न संसाधनों तक पहुँच सकें बल्कि अपने बच्चों को भी यह सीखने मे मदद कर सकें। लेकिन शिक्षक शिक्षा के मौजूदा पाठ्यक्रम चाहे वे सेवारत प्रशिक्षण हो या सेवापूर्व प्रशिक्षण, इस दिशा में उनकी कोई तैयारी नहीं करवाते।

हमारा अनुभव यह कहता है कि पढ़कर ही पढ़ना सीखा जा सकता है।" यानि जितना अधिक आप पढ़ते हैं पढ़ने के बारें में आपकी समझ गहरी होती चली जाती है: पढ़ने की क्षमता भी बढ़ती है और पढ़ना क्या है इसकी समझ भी। होता यह भी है कि कई बार यह महसूस ही नहीं होता (इसलिए शायद कि हम इन्सानों के लिए सीखने की प्रक्रिया इतनी सहज है कि लगातार कुछ सीखते रहने से वह दिमाग के अचेतन हिस्से में चला जाता है और फिर उसके बारें में सोचने के लिए हमें सचेत हिस्से को सक्रिय करना पड़ता है) कि समझ बढ़ रही है लेकिन विभिन्न कामों में यह झलकने लगती है। और फिर जब बैठकर सोचते हैं कि यह फर्क क्यों आया तब आपको उसका जवाब मिलता है कि अन्य बातों के साथ साथ पढ़ने का भी बहुत फायदा हुआ है। पढ़ने की यह प्रक्रिया सेवापूर्व और सेवारत प्रशिक्षण का हिस्सा बने इसके लिए कई स्तर पर कई तरह के प्रयास जरूरी है। सबसे पहले तो यह विश्वास पैदा कर पाना कि पढ़ना अहम है और किसी भी स्तर पर पढ़ना सीखा जा सकता है, उसे निरंतर और बेहतर किया जा सकता है। पढ़ना सीखने –सिखाने के लिए उपयुक्त सामग्री का चयन भी महत्वपूर्ण है। ऐसे सामग्री जो पढ़ने में रूझान पैदा कर सके और साथ ही यह भी एहसास दिलाये कि कुछ सीखना हो रहा है।

मेरा मानना है कि शिक्षक पढ़ना सीखेंगे तो आपसी अंतक्रियाओं की आवश्यकता बढ़ेगी, शिक्षक सीखेंगे, स्रोत व्यक्ति भी सीखने की दिशा में आगे बढ़ेंगे और प्रशिक्षणों की अंतःक्रिया समृद्ध होगी। यही नहीं ऐसे शिक्षक अपने विद्यार्थियों की भी बेहतर सीखने में मदद कर पाएंगे।